रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
डी. के. महिला

प्रश्न - 'बाबर की ममता' शीर्षक एकांकी की विशेषताओं पर प्रकाश डालें।

'बाबर की ममता' शीर्षक एकांकी की कथावस्तु एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटना पर आधारित है। घटना है - मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर के पुत्र हुमायूँ की बीमारी और उसकी जान के बदले बाबर द्वारा भगवान से अपनी जान लेने की प्रार्थना। परन्तु इस ऐतिहासिक घटना को भी एकांकीकार ने मानवीय संस्पर्श प्रदान किया है और बाबर के चरित्र को उसकी ममता के आधार पर एक शाश्वत स्वरूप प्रदान करने की चेष्टा की है। लेखक को अपने इस प्रयास में पूर्ण और वात्सल्य से पूर्ण 'बाबर की ममता' का बाबर कभी भी भुलाया नहीं जा सकता है। बाबर ने पानीपत की पहली लड़ाई में इब्राहिम लोदी को हराया था, यह चाहे लोगों को याद रहे या न रहे, परन्तु यह बात प्रत्येक सहृदय पाठक के हृदय पटल पर अंकित रहेगी कि बाबर ने अपनी जान देकर बेटे की प्राण-रक्षा की थी।

महत्व की दृष्टि से प्रस्तुत एकांकी में एक ही मूल कथा है जो आरंभ और विकास के सुनिश्चित सोपानों पर चढ़ती हुई चरम सीमा पर पहुँचती है। रंगमंच पर बाबर के उपस्थित होते ही कथा का आरंभ होता है और अबुल बका के परामर्श से कथा विकास की ओर अग्रसर होती है। बाबर की मृत्यु के साथ ही कथा चरम-सीमा पर पहुँचकर समाप्त हो जाती है। जहाँ तक संकलन-त्रय की बात है, 'बाबर की ममता' में स्थान और कार्य की एकता निश्चित रूप से वर्तमान है। कथा का विभाजन दो दृश्यों में किया गया है, परन्तु दोनों दृश्य आगरे में ही घटित हुए हैं और

एक ही स्थान पर। इसके अतिरिक्त एक ही कार्य का सम्पादन एकांकी का उद्देश्य है। वह कार्य है - बाबर की ममता का प्रदर्शन जहाँ तक काल की एकता का संबंध है, 'बाबर की ममता' में उसका अभाव है। 'बाबर की ममता' में रंग-संकेत प्रचुर मात्रा में है। दोनों दृश्यों के आरंभ में तो रंग-संकेत है, बीच-बीच में भी आवश्यकतानुसार अभिनय की सुविधा के लिए रंग-संकेतों की योजना की गई है। यथा- 'दोपहर का समय है। चारों ओर सन्नाटा छाया है और वातावरण से उदासी टपक रही है।' यह प्रसंगानुकूल है।

एकांकी-कला के अनुसार 'बाबर की ममता' में कम-से कम पात्रों की योजना हुई है। सभी पात्रों की सार्थकता है। बाबर और बेगम माहम प्रधान पात्र हैं और गौण पात्रों में हुमायूँ, हकीम और अबुल बका है। एकांकी के शीर्षक से ही पता चलता है कि इसमें बाबर का चरित्रांकन ही मुख्य है। बाबर एकांकी का नायक है, जो अपने पुत्र हुमायूँ के प्राण की रक्षा हेतु अपने प्राण न्यौछावर कर देता है। वह संसार से विदा हो जाता है फिर भी प्रसन्न है। विश्व के इतिहास की यह अलौकिक घटना है कि पिता ने इतना बड़ा त्याग किया।

'बाबर की ममता' की संवाद-योजना उतनी उत्कृष्ट नहीं है। कई स्थलों पर ऐसा लगता है कि आयासपूर्वक संवाद गढ़े हुये हैं, जिनमें स्वाभाविक प्रवाह नहीं है। यद्यपि बीच-बीच में रंग-संकेत द्वारा लेखक ने संवादों के पूर्व आवश्यक भंगिमाओं का संकेत दे दिया है। फिर भी जहाँ-तहाँ संवाद बिल्कुल बेजान और नाटकीय से लगते हैं। कहीं-कहीं बड़े अच्छे संवादों की योजना हुई है, जो स्वाभाविक, संक्षिप्त एवं सोद्देश्य हैं। यथा—

अबुल बका - हुक्म हो तो जहाँपनाह की खिदमत में मैं एक दवा अर्ज करूँ।

बाबर-यह भी पूछने की बात है! खुशी से फरमाइये।

'बाबर की ममता' की पृष्ठभूमि मुगलकालीन है और इसके पात्र भी मुसलमान हैं। इसलिए लेखक ने भाषा में उर्दू-फारसी के शब्दों का बहुतायत से प्रयोग किया है। परन्तु अनेक स्थानों पर उर्दू शब्दों की इतनी अधिकता हो गयी है कि भाषा हिन्दी पाठकों के लिए कठीन है। उदाहरणार्थ - लख्ते जिगर, लम्हा, इन्तहा, कलंदर, हिकारत आदि।

ऐतिहासिक घटनाओं के माध्यम से साहित्यकार शाश्वत मानवीय मूल्यों की खोज करता है। प्रस्तुत एकांकी 'बाबर की ममता' में भी प्रो॰ देवेन्द्रनाथ शर्मा का उद्देश्य यही है। उन्होंने इतिहास की स्थूल एवं बाह्य घटनाओं द्वारा पदार्थ सत्य नहीं, भाव सत्य की खोज की है। बाबर ने कितनी लड़ाइयाँ जीती, कितना बड़ा साम्राज्य स्थापित किया, कितने सैनिकों को अपनी फौज में भर्ती किया, इन सब बातों का चित्रण प्रस्तुत करना एकांकी का उद्देश्य नहीं है। वह तो इतिहासकार का प्रतिपाद्य है। इस एकांकी में लेखक ने बाबर के व्यक्तित्व के सर्वाधिक कोमल पक्ष उसकी ममता का उद्घाटन किया है। बाबर में वीरता, शौर्य आदि गुणों के अतिरिक्त एक ऐसा भी गुण था, जिसके लिए वह सदा अमर रहेगा। बाबर ने 1526 ई. में पानीपत की पहली लड़ाई में इब्राहिम लोदी को हराकर भारत में मुगल साम्राज्य की नींव डाली थी, इस तथ्य को लोग भुला भी सकते हैं, परन्तु उसने अपने बेटे की प्राण-रक्षा के लिए अपनी जान

दे दी इस तथ्य को कोई भी सहृदय पाठक कभी विस्मृत नहीं कर सकता। इसी भाव-सत्य का उद्घाटन करना प्रस्तुत एकांकी में एकांकीकार का मूल उद्देश्य है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज, डुमराँव
बक्सर (बिहार)

दिनांक- 09/04/2020